India, China open new vistas in science, tech

TIMES NEWS NETWORK

Kanpur: The joint declaration over co-operation on science and technology signed between India and China in November last during the visit of Chinese president here has opened new vistas for technological breakthrough, feels the three-member delegation from Chinese embassy, on a visit to the Indian Institute of Technology, Kanpur (IIT-K) on Thursday.

"The two Asian countries together can create real technological breakthrough through a mutual faculty and student exchange programme between the institutions of higher education. With focus being on fields like earthquake engineering, climate change and weather forecasting, nano-bio technology and life sciences," says counsellor Dr Wang Qiming.

The counsellor assured the officials of the student senate at IIT-Kanpur that "it will be facilitating the student exchange programme and invited them to visit institutes of higher education in China." And the first major step in this direction would be participation of the students from premier Chinese institutions in the two mega events-'Antargani' an 'Techkriti'-hosted annually at IIT-Kanpur, from next year.

Highlighting the science and technology revolution in China, the delegation from the embassy told the members of student gymkhana that "science and technology policy in China has been a five step evolution process. In the first step acquisition of technology from the developed countries was done on priority with focus being on solving the socio-economic problems."

"During initial stages there was lot of emphasis on agriculture related science and technology development, " said senior member of the delegation. The delegation firmly believes that they have to focus on their resources and that is why they have to concentrate on nano technology and bio-technology.

In the second stage assimilation of technology started by doing incremental development on the acquired technology, and in this passing third age we are focussing on innovations, informed members of the delegation. The fourth stage would be making technological breakthroughs aiming for global leadership.

In the presentation made before the IITians Dr Wang Qiming highlighted that "in terms of scientific research publication and in terms of patent filing we rank fifth in the global ranking. And the rate at which China is progressing the country would overtake Germany and will become third leading country in terms of scientific research output."

The Chinese feel that India is more advanced in the area of service sector, but China was more strong in the manufacturing field. And the combination of two together could create real time technological breakthroughs.

विज्ञान, प्रौद्योगिकी में जुड़ेंगे आईआईटी और चीन

कानपुर, 23 अगस्त। चीनी दूतावास के प्रतिनिधि मण्डल ने आज विज्ञान और प्रौद्योगिकी सलाहकार डा. वांग चिमिंग के नेतृत्व में आईआईटी का दौरा किया। प्रतिनिधि मण्डल के सदस्य जहां संस्थान के सात विभागों में गये वहीं

- चीनी दूतावास के प्रतिनिधि मण्डल का हुआ दौरा
- नैनोटेक्नोलॉजी, बॉयोटेक्नोलॉजी व आईटी में रुझान

चीन से आये डा. वांग साथ में निदेशक प्रो. धाण्डे।

उन्होंने निदेशक और इंस्टीट्यूट एडवाइजरी कमेटी के समक्ष अपनी भावी योजनाएं रखी। शाम को छात्रों को दिये व्याख्यान में डा. वांग ने चीन का विजन बताया। आज डा. वांग के नेतृत्व में चीनी दूतावास के प्रथम सचिव उफेंग और द्वितीय सचिव चाठ जियॉन ने आईआईटी का दौरा किया। आईआईटी के प्रोफेसर जयन्त चटर्जी और सहायक कुलसचिव मो. शकील के साथ प्रतिनिधि मण्डल के सदस्यों ने मैकेनिकल, इलेक्ट्रिकल, सिविल, और कैमिकल इंजीनियर आदि विभागों का दौरा किया। उक्त विभागों के अध्यक्ष, फैकल्टी से मुलाकात के साथ ही प्रयोगशालाएं भी देखी। तत्पश्चात टीम ने मीडिया सेंटर देखा। इंस्टीट्यूट एडवाइजरी कमेटी के सदस्यों के समक्ष डा. वांग ने चीन की तरक्की के बारे में बताया। उन्होंने कहा कि १९८२ से चीन ने खुलना शुरू किया और आज हम महाशक्ति बन चुके हैं। आईआईटी के बाबत उनका कहना था कि चीन के शिक्षा जगत में आईआईटी की ख्याति है और उसी के चलते हमारा यहां

- फैकल्टी और विद्यार्थियों का होगा आदान-प्रदान
- क्रिया कलापों में भी भाग लेंगे चीनी छात्र

दौरा हुआ। उन्होंने आईआईटिएंस को चीन आने का निमन्त्रण भी दिया। शाम को व्याख्यान कक्ष १७ में उन्होंने छात्रों को व्याख्यान दिया और बताया कि २०२० में चीन विज्ञान और प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में अपना लक्ष्य हासिल करेगा। चीनी प्रतिनिधि मण्डल के बाबत संस्थान के निदेशक प्रो. संजय गोविन्द धाण्डे ने कहा कि यह उनकी पहली सामान्य विजिट थी। आगे पत्राचार होगा और हो सकता है कि हम लोग मिलकर काम भी करे। चीनी प्रतिनिधि मण्डल ने सूचना प्रौद्योगिकी, नैनोटेक्नोलॉजी और बॉयोटेक्नोलॉजी की तरफ अपना रूझान दिखाया है। फैकल्टी और विद्यार्थियों का भी आदान-प्रदान होगा। व्याख्यान के दौरान प्रमुख रूप से अधिष्ठाता विद्यार्थी कार्य प्रो. प्रवॉल सिन्हा, सर्वेश चन्द्र, अरविन्द कोठारी आदि थे।

आईआईटी : चीनी दल ने तलाशी संभावनाएं

शोध व अध्ययन के लिये प्रयोगशालाओं को परखा

कानपुर, शिक्षा संवाददाता: चीनी दूतावास के तीन सदस्यीय दल ने भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान (आईआईटी) में विज्ञान व प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में अध्ययन व शोध की संभावनाएं तलाशी। उन्होंने कंप्यूटर साइंस, बायोलॉजी व मैनेजमेंट में विशेष रुचि दिखायी।

प्रातः भारत स्थित चीनी दूतावास के साइंस एंड टेक्नालाजी सलाहकार डॉ. वांग क्विमिंग प्रथम सचिव डॉ. कॉव जेनरू व द्वितीय सचिव वू फेंग यहां पहुंचे। उन्होंने आईआईटी निदेशक प्रो. संजय गोविंद धांडे, उप निदेशक प्रो. कृपा शंकर समन्वयक प्रो. जयंत चटर्जी के साथ कंप्यूटर साइंस एंड इंजीनियरिंग, केमिकल इंजीनियरिंग, समटेल सेंटर, इलेक्ट्रिकल इंजीनियरिंग सहित विभिन्न विभागों की प्रयोगशालाओं को देखा और जानकारियां हासिल कीं।

चीनी दल ने एल-7 में संकाय सदस्यों को संबोधित करते हुये चीन के तीन बड़े तकनीकी शिक्षा वाले विश्वविद्यालयों के बारे में बताया। चीनी दल ने सायं इंस्टीट्यूट एडवायजरी कमेटी को संबोधित किया। निदेशक प्रो. धांडे ने बताया कि आईआईटी का एक स्नातक छात्र चीन जा चुका है। इस सत्र से वहां के छात्र यहां और यहां के छात्र शोध के लिये आ-जा सकेंगे।

आईआईटी पहुँचे चीनी दल ने संभावनाएँ तलाशीं

सहयोग लेने आए विदेशी

कानपुर (कासं)। आईआईटी से सहयोग लेने गुरुवार को चीनी दूतावास का एक प्रतिनिधि मण्डल संस्थान पहुँचा। चीनी सदस्यों ने आईआईटी के साथ कुछ विशेष क्षेत्रों में सहयोग लेने पर विचार विमर्श किया। चीनी सदस्यों ने आईआईटी के कुछ विभागों को देखा लेकिन यह स्पष्ट नहीं किया कि वे किन क्षेत्रों में आपसी समझौता करना चाहते हैं। मंगलवार को आईआईटी जापान के कियो विश्वविद्यालय के साथ आपसी समझौते पर हस्ताक्षर कर चुका है।

चीन के काउंसलर डॉ. वांग डिमिंग, प्रथम सेकेट्री काओ जिवान और द्वितीय सेक्रेट्री वु फैंग दोपहरबाद आईआईटी पहुँचे। निदेशक प्रो. संजय गोविंद धाण्डे के साथ घंटों चली वार्ता के बाद उन्होंनें संस्थान के कई वैज्ञानिकों के साथ वार्ता की। चीनी दल की रूचि बायोलॉजिकल साइंसेज एण्ड बायोलॉजिकल इंजीनियरिंग के अलावा मैकेनिकल, रसायन व उद्योगों से जुड़ी कई ब्रांच में दिखी।

इनका कहना था कि चीन और भारत में कई समानताएँ हैं। दोनों के बीच शैक्षणिक और तकनीकी समझौते होने से दोनों के बीच रिश्ते मधुर होंगे और दोनों को ही इसका फायदा होगा।

दुनिया के वैज्ञानिक नेतृत्व को तैयार चीन : डा. वांग

सहारा न्यूज ब्यूरो

कानपुर, 23 अगस्त।

चीनी दूतावास के वैज्ञानिक व तकनीकी सलाहकार डा. वांग क्विंग ने कहा कि चीन इक्कीसवीं सदी में दुनिया का वैज्ञानिक नेतृत्व करने के लिए तैयार है। चीन सरकार विज्ञान और तकनीकी क्षेत्र में भारी निवेश कर रही है। यह निवेश अमरीका सहित किसी भी विकसित देश की तुलना में अधिक है। उन्होंने दो टूक शब्दों में कहा कि चीनी तकनीकी शैक्षिक संस्थान आईआईटी कानपुर के साथ तकनीकी ज्ञान-विज्ञान का अदान-प्रदान चाहते हैं। भारत कम्प्यूटर-साइंस सहित कुछ अन्य क्षेत्रों में बहुत आगे निकल चुका है।

इससे पूर्व आईआईटी परिसर में चीनी प्रतिनिधिमंडल का गर्मजोशी से स्वागत किया। छात्र मामलों के अधिष्ठाता प्रो. प्रबाल सिन्हा ने तीन सदस्यीय चीनी प्रतिनिधिमण्डल का बुके देकर स्वागत किया। छात्रों के बीच चीनी प्रतिनिधिमंडल भी अपने को सहज महसूस कर रहा था। यहां यह बताना दिलचस्प होगा कि चीनी प्रतिनिधि मंडल ने छात्रों और मीडिया से मिलने के पहले आईआईटी के निदेशक एसजी घांडे से मुलाकात की तथा मैकेनिकल, इलेक्ट्रिकल, नैनो टेक्नोलाजी तथा रोबोटिक्स के क्षेत्र में आदान-प्रदान का प्रस्ताव किया। चीनी वैज्ञानिक सलाहकार डा. वांग ने बताया कि चीन की अर्थव्यवस्था तेजी से तरक्की कर रही है। चीन सरकार शोध व तकनीकी क्षेत्र के विकास पर बल दे रही है। विज्ञान और तकनीकी का लाभ ग्रामीण इलाकों में पहुंचे। उन्होंने यह भी बताया कि 2020 तक विज्ञान और तकनीकी के क्षेत्र में चीनी निवेश 2560 बिलियन डॉलर से बढ़ाकर दोगुना कर दिया जाएगा।